दिनांक 6 जनवरी 2017 को संस्कृत भारती द्वारा उडुपी, कर्नाटक में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय संस्कृत विद्वान सम्मेलन में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

सर्वेभ्यो मम सादरं नमस्कारः।

1. *प्रिय बान्धवाः!* संस्कृत भारत्याः अस्य अधिवेशनस्य अस्मिन् उद्घाटनावसरे अहम् अत्र उपस्थितानां भवतां सर्वेषां हार्दिकम् अभिनन्दनम् करोमि। प्रमोदस्य एव विषयः एषः यत् अद्य अहम् भवतां सर्वेषां मध्ये अस्मि ये अहर्निशं संस्कृतेन एव जीवन्ति। धन्यं भवतां जीवनम् ये संस्कृतार्थम् जीवन्ति। यथा अहं जानामि, अवगच्छामि च, तदनुगुणं संस्कृत भारती केवलम् एकं संघटनम् एव न, अपितु अस्माकं राष्ट्रस्य 'श्वासः' एव येन वयं जीवामः।

2. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति पश्यन्त्या संस्कृत भारत्या संकल्पितः स्वप्नः, कृतानि च कार्याणि वस्तुतः जगति मानवकल्याणार्थम् एव। गीतायाम् भगवता दर्शितम् 'इहैकस्थं जगत्कृत्स्नम्' इति विश्वरूपम् संस्कृत–वांगमये एव विद्यमानम् अस्ति।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।''

इति श्लोकः मानवस्य कल्याणार्थम् संस्कृत भाषायाः एव विद्यमान वर्तते।

विश्वस्तरे अनुपाल्यमानः ''योग दिवसः'' संस्कृत भाषायः एव महत्तवं प्रकटयति। ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' इति संस्कृतस्य एव उद्घोषः।

3. यद्यपि संस्कृत एक प्राचीन भाषा के रूप में देखी जाती है तथापि इसका सन्देश सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक ही है। इस सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य भविष्य में ''संस्कृत के विकास एवं उसके लिए मार्ग प्रशस्त करने के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दस

वर्षीय योजना'' के विषय में विचार–विमर्श करना एवं संस्कृत विद्वानों को इस कार्यक्रम से जोड़ना है। मुझे आशा है कि इस सम्मेलन में इस विषय पर काफी गहन एवं विस्तृत विचार विमर्श होगा जिसके फलस्वरूप संस्कृत भाषा का निर्बाध विकास सुनिश्चित होगा। इस देववाणी को जनता के करीब ले जाने के विषय में कई विदेशी मूल के विद्वानों ने भी काम किया है जिनमें मैक्समूलर भी शामिल हैं। इस कार्यक्रम के आयोजकों ने इसके लिए जो भी प्रयत्न किया है, वह सराहनीय है। इसके लिए मैं संस्कृत भारती के अध्यक्ष श्री चांद किरण सलूजा जी को भी धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने इसके आयोजन के लिए विशेष प्रयास किए हैं। मुझे आशा है कि सभी भारतीयों में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने का उनका सपना एक दिन हकीकत बन जाएगा और भारत एक बार फिर दुनिया का सिरमौर बनेगा।

4. संस्कृत भाषा के विषय में प्रख्यात इतिहासकार सर विलियम जोन्स ने कहा था, जिसे मैं उद्धृत करती हूं– "The language of Samskrit is of Wonderful structure, more perfect than Greek, more copious than Latin and more exquisitely refined than either. Human life would not be sufficient to make oneself acquainted with any considerable part of Hindu literature."

5. इस सन्दर्भ में वैदिक साहित्य का विशिष्ट महत्व है। वेदों की दार्शनिक दृष्टि अतुलनीय है। यह चिन्तन और मनन की अद्भुत राशि है। इस साहित्य में निहित कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का विवेचन मानव समाज का दिग्दर्शक है। 'सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ' की उद्घोषणा सम्पूर्ण मानवजाति के उत्कर्ष को प्रेरित करता है। ऋग्वेद का **'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' (मिलकर चलो, मिलकर बोलो, एक–दूसरे को समझते हुए व्यवहार करो।)** यह

सन्देश विश्व समुदाय के संगठन के लिए है। वस्तुतः, मानव समाज के हित हेतु इस संस्कृत साहित्य में क्या–क्या विद्यमान नहीं हैं।

6. वैदिक काल में स्त्रियों का स्थान भी अत्यन्त गौरवपूर्ण था। ऋग्वेद के दशम मंडल में उसे साम्राज्ञी के रूप में घोषित करते हुए कहा गया है – 'सम्राज्ञी श्वशुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव'। बहुत स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि 'जहां नारियों की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते हैं।'' वह अत्यन्त बलशालिनी है, न कि 'अबला'।

7. राजनयिक एवं प्रख्यात विद्वान चाणक्य ने लिखा था जिसे मैं उद्धृत करती हूं–

''परदारेषु मातृवत् परद्रव्येषु लोष्टवत्,

आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पण्डितः।''

दूसरे की स्त्री को माता के समान, दूसरे के धन को ढेले के समान एवं दूसरों को अपने समान समझने वाले ज्ञानी होते हैं। तात्पर्य यह है कि संस्कृत का दर्शन यही शिक्षा देता है कि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'।

8. संस्कृत के बिना न तो प्राचीन भारत को समझा जा सकता है और न ही आधुनिक भारत को भी समझा जा सकता है। संस्कृत की संस्कृति समावेशी है। यह सबको साथ लेकर चलने वाली भाषा है। केवल भाषा विज्ञान की दृष्टि से ही नहीं, अपितु विश्व संस्कृति की दृष्टि से भी संस्कृत विश्व की भविष्य की भाषा है।

9. इस संबंध में संस्कृत भारती की विशिष्ट भूमिका है। वैश्विक मानव को अभिलक्षित करके ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' यह मंत्रांश इस संगठन का ध्येय वाक्य है। यहां आकर जो मैंने अनुभव किया, वह अतुलनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि 'संस्कृत ही हमारी जनभाषा है''। यह एक आनंददायिनी अनुभूति है।

10. प्रिय बन्धुओ! मुझे यह भी पता चला कि कर्नाटक में शिमोगा जिले में दो गांव ऐसे हैं, जहां सभी लोग संस्कृत भाषा में ही बोल–चाल करते हैं। यह काफी प्रेरणादायक है। इस भाषा को देश भर में लोकप्रिय बनाने के लिए स्पष्ट लक्ष्य और योजना की आवश्यकता है। भारत सरकार द्वारा संस्कृत के विकास के लिए जिस ''विज़न और रोडमैप'' को तैयार किया गया है, उस पर विचार–विमर्श होने से इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति में मदद मिलेगी। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि न केवल संस्कृतज्ञों बल्कि आम जनों के मुख से भी संस्कृत भाषा सुनी पढ़ी जाए। सबकी सम्पर्क भाषा बने।

11. आज विश्व स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण, तापवृद्धि, अत्यधिक भोग प्रवृत्ति, परस्पर संघर्ष, दरिद्रता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसे अनेकों समस्याएं हैं जिनके निवारण के लिए संस्कृत साहित्य में विद्यमान ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। वास्तव में, इस साहित्य में ज्ञान की त्रिवेणी सहजता से उपलब्ध है। चाहे दैहिक, दैविक हो या आध्यात्मिक हो, संस्कृत भाषा का साहित्य evergreen lamp post की तरह है जो सदा–सर्वदा संसार को आलोकित करता रहेगा।

12. महर्षि अरविन्द के शब्दों में संस्कृत भाषा की व्याख्या इस प्रकार थीः– "Samskrit language, as has been universally recognized by those competent to form a judgement, is one of the most magnificient, the most perfect, the most prominent and wonderfully sufficient literary instrument development by the human mind". आज का आधुनिक आविष्कार कम्प्यूटर भी संस्कृत को तकनीकी रूप से सर्वाधिक सक्षम भाषा मानता है।

13. Friends, we all know that *Samskrita Bharati* had been set up with the Mission to *Revive a language, Rejuvenate a culture, and Rebuild a nation that is Bharat* over three and half decades back. This institution has been successful in transforming teaching curricula of Sanskrit across the country. Needless to say, Samskrita Bharati has emerged as a devoted organization and also as a movement for the revival of Sanskrit to a place of its rightful glory.

14. पिछले 35 सालों में संस्था ने पूरे देश में संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य किया है। मुझे इस बात की खुशी है कि इस संस्थान ने लगभग एक लाख बीस हजार कैम्प लगाकर 10 लाख से ज्यादा लोगों को संस्कृत भाषा में बोलने की शिक्षा दी है। एक लाख से ज्यादा संस्कृत शिक्षक को प्रशिक्षण दिया है और 450 से अधिक किताबों के अतिरिक्त 50 ऑडियो/वीडियो सीडी जारी की है। करीब 6000 ऐसे परिवार हैं जिन्हें संस्कृत बोलना सिखाया गया है तथा सुदूर के चार गांवों को संस्कृत बोलने वाले गांव के रूप में मान्यता मिली है। 2000 शिक्षण केन्द्रों के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के 15 देशों में संस्कृत प्रशिक्षण का कार्य चल रहा है। वर्ष 2011 में तो बंगलौर में प्रथम विश्व संस्कृत पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया। यह हर्ष का विषय है कि राज्य सरकारें भी इस भाषा के संवर्धन एवं विकास में निरंतर रूचि ले रही हैं।

15. आदिकाल से ही संस्कृत ज्ञान–विज्ञान की भाषा रही है। उस परम्परा की रक्षा की जानी चाहिए। इस भाषा को कैसे लोकप्रिय बनाया जाए, इस पर संस्कृतज्ञ लोग मिल बैठकर चिन्तन करें और भाषा के पठन–पाठन, अध्ययन–अध्यापन को कैसे आकर्षक और उपयोगी बनाया जा सके। संस्कृत भाषा का जीवन के साथ सीधा संबंध है। आम जनता में संस्कृत

भाषा को लोकप्रिय बनाने हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर शोध किए जाने की आवश्यकता है। यदि संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टि से किया जाए तो निर्धारित लक्ष्य को बहुत हद तक हासिल किया जा सकता है।

16. हमारे जैसे बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक एवं विविधतापूर्ण समाज में संस्कृत का अपना विशेष स्थान है। चूंकि हमारे यहां शिक्षा की परम्परागत गुरू–शिष्य परम्परा काफी समृद्ध रही है जिसमें उनके बीच परस्पर घनिष्ठ संबंध विकसित होते थे एवं गुरूकुल परम्परा से अध्ययन की प्रक्रिया में ज्यादातर ज्ञान को कंठस्थ ही करा दिया जाता था। उस संदर्भ में संस्कृत भाषा बहुत उपयोगी सिद्ध होती थी। भारत के सारे प्राचीन ग्रन्थ जैसे श्रीमद्भागवतगीता, रामायण, वेद, पुराण, उपनिषद, महाभारत तथा अन्य शास्त्र संस्कृत भाषा में ही थे एवं गुरूजन अपने शिष्यों को सारी शिक्षाएं कंठस्थ करा दिया करते थे। उनका जीवन ब्रह्मचर्य युक्त एवं काफी व्यवस्थित होता था। आधुनिक शिक्षा पद्धति लागू होने से शिक्षा के तरीके में बदलाव हुआ है, परंतु ज्ञान की गंगा तो अब भी वही है। अतः, हमें नवीनता के साथ प्राचीनता का कुशल सामंजस्य स्थापित करना चाहिए। मैं समझती हूं कि संस्कृत भारती इस कार्य में निरंतर लगी हुई है। ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने कर्मपथ पर निरंतर चलते रहे। सफलता या असफलता में से एक तो मिलेगी ही, यह निश्चित है कि यदि प्रयास सकारात्मक दिशा में हो, तो सफलता सुनिश्चित हो जाती है।

17. Friends, such is the vitality of this language that the modern-day scientists are trying to understand the intricacies of the universe through the analysis of various concepts and themes mentioned in our ancient *shastras* through Sanskrit.

18. संस्कृत भाषा में ज्ञान और विज्ञान बहुत समृद्ध था। संस्कृत के श्लोकों में छिपे हुए ज्ञान और विज्ञान के सूत्रों को आज भी डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक जानने एवं समझने का प्रयास कर रहे हैं। चरक संहिता, सुश्रूत संहिता चिकित्सा शास्त्र के ऐसे ग्रन्थ हैं जिनके सूत्रों का विवेचन अब भी किया जा रहा है। कैंसर एवं कई अन्य असाध्य व्याधियों एवं उनके उपचार का वर्णन उक्त पुस्तक में सदियों पहले किया गया है।

19. महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कि वेदों की ओर लौटो। यह उद्घोष वास्तव में हमारे समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास को जानने–समझने के लिए ही था। भारत को विश्व गुरू इसलिए माना गया क्योंकि हमारा इतिहास समृद्ध था, संस्कृति अतुलनीय एवं जीवन पद्धति सरल और सीधी–सादी। अतः, हमें अपने मूल की ओर लौटना चाहिए।

20. इस शुभ अवसर पर मैं श्रद्धापूर्वक उनका भी स्मरण करना चाहती हूं जिन्होंने राष्ट्र निर्माण हेतु निरंतर 33 वर्षों तक देश के कोने–कोने में जाकर लोगों को प्रेरित किया, जिन्होंने अपने विचारों एवं आचरण से युवकों के जीवन को परिवर्तित किया। वे हैं 'गुरूजी' नाम से प्रसिद्ध हमारे प्रेरणास्रोत श्री माधव सदाशिव गोलवरकर। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इस पवित्र अवसर पर ही संस्कृत में अनूदित श्रीगुरूजी समग्र वांगमय के अवशिष्ट छह खण्डों का लोकार्पण किया जा रहा है। गुरू गोलवलकर जी का जीवन त्याग और सेवा का साक्षात् उदाहरण है एवं वे भारतीय संस्कृति के एक प्रकाश स्तम्भ हैं और सदैव रहेंगे।

21. अध्ययन–अध्यापन में तत्पर आप संस्कृतप्रिय एवं मां सरस्वती के उपासक और आराधक हैं। मैं यहां उपस्थित सभा को पुनः श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए आप सभी के साथ मिलकर गाना चाहूंगी.....

''पठामि संस्कृतम् नित्यम्, वदामि संस्कृतं सदा।

ध्यायामि संस्कृतम् सम्यक्, वन्दे संस्कृतमातरम्।।''

22. मैं इस सम्मेलन में उपस्थित संस्कृत विद्वानों, विद्यार्थियों एवं आयोजक का धन्यवाद करती हूं जो इस सम्मेलन को सफल बनाने की कामना से एकत्र हुए हैं। भारत एवं इसकी संस्कृति की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के उद्देश्य से संस्कृत भारती द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए मैं संस्था के आयोजकों को भी साधूवाद देती हूं। साथ ही, नव वर्ष में सभी भारतवासियों, विशेषकर यहां उपस्थित सभी नागरिकों को मैं नव वर्ष की शुभकामनाएं देती हूं एवं जीवन्त भारत के निर्माण में आप सभी के सहयोग की अपेक्षा करती हूं।

धन्यवाद।